महामत कहे ऐ मोमिनों, ए पाती की हकीकत ।
अब मुकदमा कहों, फरदा रोज कयामत ॥८८॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी महाराज फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! इस पाती की कुल जानकारी आप को कही है । अब आगे कयामत को जाहेर करने की हकीकत आपसे कहता हूं ।

(प्रकरण ४८, चौपाई २५२८)

अब दिल्ली छोड़ उदेपुर आए

कामा पहाड़ी से होए, आए बीच आमेर ।
दिन एक दोए रह के, पीछे आए सांगानेर ॥१॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी मोमिनों की चिट्ठी आने के बाद राजस्थान की ओर पैदल चलकर आमेर (जयपुर) पहुंचे । आमेर में दो दिन रह कर वहां से श्री जी सांगानेर आए ।

थे मुकुन्ददास उदयपुर, उहां से आए सांगानेर ।
तहां चरचा करने लगे, सुना सोर लड़ाई का जोर ॥२॥

उधर मुकुन्ददास उदयपुर रहते थे । वहां से वो सांगानेर आए तथा सुन्दरसाथ से मिले । आपस में चर्चा होने पर यह पता चला कि १२ मोमिन जब इमाम मेंहदी साहिब के आने तथा कयामत के निशान जाहेर होने का पैगाम देने गए तो शरीयत के काजी तथा कोतवाल ने किस प्रकार मोमिनों पर अत्याचार किया तथा इस बात का अधिक शोर-शराबा था, जो मोमिनों ने भेष बदला था । वह सब कुछ मुकुन्ददास ने सुना ।

तब उहां से चले, आए पोहोंचे आमेर ।
उहां श्री जी साहिब जी की खबर सुनी, फेर आए सांगानेर ॥३॥

मुकुन्ददास जी सांगानेर से आमेर पहुंचे । वहां से आने पर उन्हें पता चला कि स्वामी जी यहां से सांगानेर चले गए हैं । तब मुकुन्द दास जी आमेर से पुनः सांगानेर आए ।

तहां राह बीच में, सेख बदल मिले ।
तिनसों मिल चल के, आए पेंडे मवासियों के ॥४॥

वहां राह में जाते समय मुकुन्ददास जी की मुलाकात शेख बदल जी से, जो दिल्ली से स्वामी जी से मिलने के लिए आ रहे थे, अचानक ही हो गई । दोनों सांगानेर से चलकर मवासियों की बस्ती के पास पहुंचे ।

Nijanand App

तिनों ताके मारनें, थे पैसे बीच कम्मर ।
डर लगा बोहोतक, भागे उतथें फेर कर ॥५॥

मवासियों ने इनकी वेशभूषा देखकर लूटने का विचार कर लिया । इनकी कमर में रूपये बंधे हुए थे इसलिए दोनों बहुत डर गए तथा वहां से भागकर श्री राज जी की मेहर से अपनी जान बचाई ।

तहां से आए पुर में, तहां एक दुकान पर ।
श्री जी साहिब जी बैठे देखे, एक खाट ऊपर ॥६॥

वहां से चलकर वे पुरा नाम के गांव में पहुंचे । वहां श्री जी एक दुकान के सामने खाट पर विराजमान थे । वहां उनके दर्शन किए ।

छबील दास आगे खड़ा, और मलूकचन्द नाम ।
दोऊ दुखी पड़े हते, छुदा जोर थी इस ठाम ॥७॥

छबीलदास तथा मलूकचन्द दोनों भूख के कारण से लाचार होकर श्री जी के चरणों में बैठे थे ।

घर में कछु न पाइए, जो मंगावे बाजार से ।
पहिचाने सेख बदल नें, कदमों लागे इन समें ॥८॥

उस समय श्री जी के पास एक पैसा भी नही था कि बाजार से कुछ मोल लेकर खा लेते । शेखबदल ने दूर से ही पहचान लिया और चरणों में आकर शीश झुकाकर प्रणाम किया ।

मुकुन्द दास आए मिले, थे बसनी रूपैये सौ चार ।
मोल मंगाए बाजार से, चला कार वेहेवार ॥९॥

श्री मुकुन्ददास जी भी आकर श्री जी से मिले । उनके पास गांठ में चार सौ रूपये थे । कमर में बंधी गांठ में से रूपये निकाले और बाजार से सामग्री मंगाकर भोजन का प्रबन्ध किया ।

थे पैसे सेख की गिरह में, रूपैया सौ तीन ।
उन आए आगे रखे, लगे बातें करने आकीन ॥१०॥

और शेखबदल की गिरह में तीन सौ रूपये थे । उन्होंने तुरन्त सब रूपये खोलकर श्री जी के चरणों में रख दिए । धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी पर पूरे ईमान के साथ वे दिल्ली का समाचार सुनाने लगे।

किया परियान रात को, मुकुन्ददास मिल के ।
मुकुन्ददास के मन में, खेद हुआ दिल से ॥११॥

मुकुन्ददास जी और श्री जी साहिब जी ने मिलकर रात को विचार-विमर्श किया । बादशाह के दरबारियों ने मोमिनों पर जो अत्याचार किया था, उसे सुनकर मुकुन्ददास जी के मन में बहुत दुःख हुआ ।

Nijanand App

श्री जी साहिब जी के दिल की, लगे बातें पूछन ।
देखें कैसी मसलत करत हैं, हुआ कसाला ऊपर मोमिन ॥१२॥

मुकुन्ददास जी ने श्री प्राणनाथ जी के मन की बात को जानने के लिए बड़ी युक्ति के साथ श्री जी से बातचीत की । दिल्ली में अपने सुन्दरसाथ पर इतना अत्याचार होने के बाद इनके दिल में मुसलमानों के प्रति कैसी भावना है और आगे इनके विचार क्या हैं । मुकुन्ददास जी एक पक्षीय (हिन्दू पक्ष) होने के कारण इस बात से दुःखी थे कि स्वामी जी मुसलमानों के चक्कर में क्यों पड़े हैं ? हिन्दू धर्म-ग्रन्थों के ज्ञाता होने पर ये भी भूले हुए थे कि आत्मा हिन्दू-मुसलमान के भेद से परे है । अपने ज्ञान के अहंकार में आकर धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी के साथ ये साधारण इन्सानों जैसा व्यवहार कर रहे थे ।

तब श्री जी साहिब जीएं कह्या, अब ना छोड़ों इनें ।
और इलाज कर मारहों, जड़ उखाड़ों बुनियाद पने ॥१३॥

इनके प्रश्नों के उत्तर में श्री प्राणनाथ जी ने कहा कि अब हम मुसलमानों को इस तरह से नही छोड़ेंगे। किसी हिन्दू राजा की आत्मा को जगा कर उसके द्वारा उन्हें जड़ मूल से उखाड़ कर नष्ट कर देंगे ।

जोर देखी हिम्मत, श्री जी साहिब जी के मन में ।
अब कहां को जाएंगे, विचार कहो हम सें ॥१४॥

जब मुकुन्द दास जी ने श्री जी के मन में अद्‌भुत आवेश एवं आत्म बल देखा तब श्री जी ने मुकुन्द दास से कहा कि इस बात पर विचार करके मुझे बताओ कि अब मुसलमान मुझसे बच कर कहां जायेंगे?

इत जरगा पंथी बोहोत हैं, तहां आदमी मिले लाख ।
धनी बाबे का पंथ है, ए अपनी पूरे साख ॥१५॥

तब मुकुन्द दास जी ने उदयपुर का वृत्तान्त सुनाते हुए कहा कि उस क्षेत्र में जरगा पंथी लोग अधिक रहते हैं । यह धनी बाबा का पंथ कहलाता है । ये लोग आत्मिक साधना को महत्व देते हैं । उनके सिद्धान्त हमारे निजानन्द सम्प्रदाय की साक्षी देते हैं ।

ए बात सुनके, मुकुन्ददास पर हुआ हुकम ।
तू देख बातें करके, उत बुलाओ हम ॥१६॥

उनके ऐसे विचार सुनकर श्री जी ने मुकुन्दास जी को हुकम दिया कि इतने दिन तक तुम उदयपुर रहे किन्तु किसी को भी सुन्दरसाथ नही बना सके । अब मेरे हुकम से जाओ तथा उनसे बातें करो । उनके मन में जब श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न हो जाए तो मुझे वहीं पर बुला लेना ।

Nijanand App

मुकुन्द दास मलूक चन्द, चले उहाँ से जब ।
भील दौड़े तिन पर, भाग के छूटे तब ॥१७॥

मुकुन्ददास जी तथा मलूकचन्द जी श्री प्राणनाथ जी की आज्ञा के अनुसार चल पड़े । राह में भील उनको लूटने के लिए पीछे दौड़े । किसी तरह से भाग कर ही उनसे पल्ला छुड़ाया ।

मुकुन्द दास विचार के, आया उदयपुर गया लाधू ।
मसानी के इहां, करी श्री जी साहिब जी की फिकर ॥१८॥

मुकुन्ददास जी वहां से विचार कर उदयपुर आए तथा लाधू मसानी के घर पहुंचकर श्री जी साहिब जी की पहचान की बातें करने लगे ।

उनसों जाए बातां करी, श्री जी साहिब जी के मिलाप ।
कबूल करी उननें, बुलाए ल्याओ तुम आप ॥१९॥

मुकुन्द दास जी ने लाधू मसानी से श्री जी की पहचान कराते हुए शास्त्रों से उन्हें श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार पूर्ण ब्रह्म के जब कलियुग में आने की बात सुनाई तथा श्री जी के दर्शन की बात कही तो उसने स्वीकार कर लिया और कहा कि आप स्वयं श्री जी को यहां लाने की कृपा करें ।

इन समें बनमाली दास, आए खंभात से ।
संग राम बाई गोदावरी, आए पहुंची इन समे ॥२०॥

खंभात से इस समय बनमाली दास, श्री प्राणनाथ जी के दर्शन के लिए आए । उनके साथ उस समय रामबाई तथा गोदावरी भी आई थी ।

मुलाकात करी इनों ने, तन मन दिया धन ।
मेला मोमिनों का हो चला, खुसाल हुआ मन ॥२१॥

श्री जी के दर्शन करते ही उन्होंने अपना सर्वस्व तन मन धन समर्पित कर दिया । इस प्रकार मोमिनों की जमात फिर इकट्ठी होने लगी । यह देखकर श्री जी साहिब अति प्रसन्न हुए ।

श्री बाई जी और साथ, रहें आगरे में ।
मुकुन्ददास आए पोहोंचे, पाई खबर उनसे ॥२२॥

श्री बाई जी राज तथा अनेक सुन्दरसाथ आगरे में थे । मुकुन्द दास ने उदयपुर से आकर श्री जी को लाधू मसानी के भाव प्रकट किए ।

Nijanand App

लाधू मसानी आइया, बीच दीन इसलाम ।
तिनने बुलाए तब, दई जगा रहने की ठाम ॥२३॥

लाधू मसानी ने निजानन्द सम्प्रदाय को आपकी पहचान होने के बाद स्वीकार कर लिया है । उसने आप सब को अपने यहां बुलाया है । रहने के लिए जगह की अच्छी व्यवस्था कर दी गई है ।

तब श्री बाई जी को बुलाए, आप चले उदयपुर ।
साथ सब संग चले, पीछे दज्जालें किया सोर ॥२४॥

तब श्री जी ने बाई जी राज सहित सब सुन्दरसाथ को आगरे से बुलवा लिया तथा सबके साथ उदयपुर के लिए रवाना हुए । स्वामी जी के वहां से आ जाने के बाद कुछ दुष्ट लोग निन्दा करने लगे ।

लाधू भाई के आए, उतरे उनके घर में ।
आदर भाव उन किया, हुई सेवा भली उनसे ॥२५॥

लाधू मसानी का भाई भाग कर श्री जी को लेने आया । उसने सुन्दरसाथ सहित श्री प्राणनाथ जी को अपने घर ठहराया । अपनी शक्ति तथा श्रद्धा के अनुसार उसने अच्छी सेवा की ।

फेर लाधू मसानी के इहां, मुकुन्ददास दई खबर ।
उनसों मुलाकात करी, उन दिल में भई असर ॥२६॥

मुकुन्द दास जी ने लाधू मसानी से मिल कर श्री जी के आने का समाचार दिया । यह सुनकर वह बहुत प्रसन्न हुआ तथा श्री जी की चर्चा से प्रभावित हो कर उसका मन प्रसन्न हो गया ।

तब उन हवेली दई, उतरे उन ठौर ।
तहां चरचा होने लगी, रही बात न हक बिन और ॥२७॥

तब लाधू मसानी एक हवेली का प्रबन्ध करके श्री जी तथा सब सुन्दरसाथ को वहां ले गया । वहां श्री जी की रसमयी चर्चा जिसमें क्षर, अक्षर, अक्षरातीत तथा परमधाम के अखण्ड सुखों का वर्णन होने लगा । उस समय सब सुनने वालों के दिल पर परमधाम तथा श्री राज जी के बिना और कोई भी बात नही थी ।

नया मंडान होए चला,साथ आवत बीच इसलाम ।
हुई वेद कतेब की चरचा, इत पाया विसराम ॥२८॥

उदयपुर के बहुत से लोग श्री जी की चर्चा के प्रभाव से सुनने आने लगे । कई नए सुन्दरसाथ श्री जी की पहचान कर श्री निजानन्द सम्प्रदाय में शामिल हुए । श्री जी वेद, कुरान और शास्त्र आदि की चर्चा करते थे । जिसे सुनकर सुनने वाले की आत्मा को प्रसन्नता होती थी ।

Nijanand App

इत चरचा होने लगी, जहां तहां हुई खबर ।
सब दीदार को आवत, चरचा सुनने पर ॥२९॥

यहाँ होने वाली चर्चा का समाचार सारे उदयपुर में फैल गया । सभी लोग चर्चा से अधिक उनके तेजोमयी स्वरूप के दर्शन करने आते थे । यहां मधुर वाणी की चर्चा सुनकर सुख पाते थे ।

अपने साथ के लोग जो, ताके चित भए सनमुख ।
दीदार श्री जी साहिब जी के, बड़ो जो पायो सुख ॥३०॥

उदयपुर में सुन्दरसाथ परमधाम और श्री राजजी महाराज के स्वरूप के पहचान की चर्चा सुनकर माया से जाग्रत होकर श्री जी के चरणों में समर्पित हो गए । उनके दर्शन पाकर सबने आनन्द प्राप्त किया ।

दोए राजपूत हवेली मिने, तिन उत बैठे सुनी बान ।
तिनों को तारतम की, कछुक भई पहिचान ॥३१॥

लाधू मसानी के पड़ौस में दो राजपूतों की हवेली थी । अपनी हवेली में बैठे-बैठे ही श्री जी की चर्चा सुनी तो उनको तारतम ज्ञान एवं श्री जी के स्वरूप की कुछ पहचान हुई ।

इन समें नूर महम्मद सों, होए गई मुलाकात ।
गला चरचा सुन के, नीके सुनी बात ॥३२॥

इस समय नूर मुहम्मद की श्री जी से मुलाकात हो गई । श्री जी की जोश और आवेश भरी चर्चा सुनकर उसका मन पिघल गया । उसने स्वामी जी की वाणी को चित्त से सुनकर विचार किया ।

इत एक सैयद बारात से, सुनी चरचा दीन इसलाम ।
ईमान ल्याया इन समें, देख मोमिनों काम ॥३३॥

एक सैयद बारात में उदयपुर आया था । उसने भी चर्चा सुनी । उसने हकीकी दीने इसलाम (श्री निजानन्द सम्प्रदाय) की चर्चा रूचिपूर्वक सुनी और सुन्दरसाथ को श्री जी के चरणों में समर्पित हुआ देखकर तारतम ले लिया ।

और भीखू सोनी आइया, और राधा रूकमन ।
और सुन्दर सोना, आई कदमों मोमिन ॥३४॥

भीखू भाई सोनी, राधाबाई, रूकमन बाई, सुन्दरबाई तथा सोना बाई इत्यादि समर्पित होकर श्री जी के चरणों में आ गई ।

Nijanand App

इहां मयाराम वास देव, और सुकदेव देरासरी ।
ए आए साथ में, श्री राज की मेहर उतरी ॥३५॥

मैयाराम, वसुदेव, शुकदेव और देरासरी भी यहां तारतम लेकर सुन्दरसाथ में शामिल हुए । वहां श्री राजजी की कृपा होने लगी ।

इत जगीसा अमोला, इत आया केतेक साथ ।
चरचा उच्छव करत हैं, जाके धनीएं पकड़े हाथ ॥३६॥

यहां जिगीशा तथा अमोला भाई सहित बहुत से सुन्दरसाथ ने श्री जी की पहचान करके तारतम लिया। श्री राजजी की जिन पर मेहर होती है, वे ही उत्सव, रसोई आदि की सेवा भी करते हैं ।

यों मास चार भए, जो साथ लड़े संग सुलतान ।
तिनों ने अरज करी, लिखी ए पहिचान ॥३७॥

इस प्रकार १२ साथी, जो काजी शेख इस्लाम के यहां कुरान से उसे समझाते रहे । चार महीने के पश्चात् उन्होंने श्री जी की सेवा में इस प्रकार पत्र लिखा ।

ए सरियत सों हम लड़े, देख आए नैनों निदान ।
बिना सोंटे इन पर, ए क्योंए न ल्यावें ईमान ॥३८॥

हमने औरंगजेब और शेख इसलाम, जो शरीयत का सबसे बड़ा काजी था, उसे कुरान से हर प्रकार से समझाकर देख लिया कि डण्डे की चोट के बिना ये लोग हकीकी दीने इसलाम (श्री निजानन्द सम्प्रदाय) एवं ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी पर विश्वास लाने वाले नही हैं ।

ए नीके हम देखिया, इनको नही ईमान ।
तो पैगाम को फेरिया, सुन्या न हुकम सुभान ॥३९॥

हम लोगों ने अच्छी तरह से देख लिया है कि इनको सत्य इस्लाम, एवं ईमाम मेंहदी पर जरा भी विश्वास नही है । इसलिए उन्होंने संदेश लौटा दिया तथा ईमाम मेंहदी साहिब के हुकम को लौटा दिया।

अब हम राह देखत हैं, जो हमको आवे हुकम ।
तिन माफक हम करें, जैसा लिख भेजो तुम ॥४०॥

उन मोमिनों ने श्री जी को लिखा कि अब हम लोग आपके हुकम की इन्तजार में हैं । आप जो कुछ भी लिख कर भेजेंगे । उसके अनुसार ही हम काम करेंगे ।

Nijanand App

तब पाती लिखी उन पर, उठके आइयो तुम ।
इन पर सोंटा होएगा, कादर के हुकम ॥४१॥

तब आप श्री प्राणनाथ जी ने उनको पत्र लिख कर भेजा कि आप लोग बादशाह के यहां से उठ कर मेरे पास उदयपुर आ जाओ । श्री राजजी महाराज के सत अंग अक्षर ब्रह्म के हुकम से इन पर डंडा बरसेगा। तब यह लोग सीधे रास्ते पर आयेंगे तथा तुरन्त ईमान लायेंगे ।

पाती सेख बदल ल्याइया, दिल्ली बीच मोमिन ।
सुनके सुख पाइया, दिल हुआ रोसन ॥४२॥

शेख बदल भाई पत्र लेकर दिल्ली में काजी के घर बैठे मोमिनों के पास आये । श्री जी के पत्र को सुन कर साथियों को बहुत आनन्द हुआ । धनी के प्रेम भरे वचनों से उनका दिल खुशी से खिल उठा।

जाए सेख इसलाम पे, हमको रजा देओ तुम ।
हम जावेंगे अपने ठौर, हमको करो हुकम ॥४३॥

तब वे सुन्दर साथ शेख इसलाम के पास गए और कहा कि हम को यहां से जाने की आज्ञा दीजिए। हम लोग अपने ठिकाने ईमाम मेंहदी के कदमों में जाने के लिए आप से अनुमति चाहते हैं ।

तब काजी ने कहया, मैं रजा कराऊं सुलतान ।
तुम परसों आइयो, आम खास सुनाऊं कान ॥४४॥

तब काजी शेख इसलाम ने कहा कि मैं आपके जाने की मंजूरी ले लूंगा । आप लोग परसों आना तो मैं आम मजलिस बुलवा कर सब मुसलमानों को, काजियो को तथा बादशाह को विशेष रूप से आप के जाने की सूचना देकर मंजूरी ले लूंगा ।

तब एक दिन बीच डार के, ले चला हजूर ।
सुलतान सामे ठाढ़े किए, आप हजूर किया मजकूर ॥४५॥

तब एक दिन छोड़ कर तीसरे दिन काजी साथियों को लेकर दरबार में गया । इनको सुलतान के सन्मुख खड़ा करके शेख इसलाम ने बादशाह से कहा ।

ए बिदा होत हैं, जात अपनी ठौर को ।
ए वही लोग हैं, जिन लड़ाई करी सरे मों ॥४६॥

हजूर ! यह लोग अपने घर जाना चाहते हैं । यह वही लोग हैं जिन्होंने हम शरीयत वालों को कुरान और हदीसों से ईमाम मेंहदी साहिब के आने और कयामत के जाहिर होने की पहचान करायी है ।

Nijanand App

तब काजी ने कहया, एही मोमिन उस दिन ।
तुमसों जिन मजकूर किया, ल्याए ईमान मोमिन ॥४७॥

तब काजी ने कहा कि हे हजूर ! यह वही मोमिन हैं जिन्होंने उस दिन आप से बातचीत की थी । दीने इसलाम (निजानन्द सम्प्रदाय) पर ईमान लाकर कुर्बान होने वाले यही मोमिन हैं ।

देख्या सामें सुलतान ने, तीन बेर फेर फेर ।
सिर नवाए देखिया, दे खुदा इनों खेर ॥४८॥

बादशाह ने काजी की बात सुन कर तीन बार इनकी ओर देख कर खुदा को याद करते हुए सिर झुका कर कहा कि ऐ खुदा ! इन पर रहम करो ! इन्हें खैर दो !

एक सौ रूपैया खरच, देने का किया हुकम ।
सिताबी ले दौड़िया, लेओ मोमिनों तुम ॥४९॥

बादशाह ने इन मोमिनों को सौ रूपये रास्ते के खर्च के लिए देने का हुकम किया । खजांची शीघ्र दौड़ कर रूपये ले आया तथा उनको देते हुए बोला कि हे मोमिनों ! यह बादशाह की तरफ से भेंट स्वीकार कीजिये ।

जब रजा दई सुलतान ने, तब राजी हुए मोमिन ।
बिदा होए के चले, रहे एक दूसरे दिन ॥५०॥

जब बादशाह ने जाने की मंजूरी दे दी तब सब साथी यह सुन कर बहुत खुश हुए । दिल्ली में एक दो दिन ठहर कर दिल्ली से उदयपुर के लिए रवाना हुए ।

आए पोहोंचे उदयपुर, मुलाकात करी श्री राज ।
भेख बदल सामिल भए, भए इसलाम के काज ॥५१॥

दिल्ली के सुन्दर साथ को छोड़ कर बाकी मोमिनों ने श्री जी के चरणों में आकर प्रणाम किया पुनः अपना भेष बदल कर सुन्दर साथ में शामिल हो गए और अपने श्री निजानन्द सम्प्रदाय के जागनी कार्य में मग्न हो गए ।

एक लखमन भीम भाई, स्याम दास खिमाई ।
सामलदास गरीबदास, और संग लालबाई ॥५२॥

इस समय श्री लाल दास जी, भीम भाई, स्याम दास, खिमाई भाई, श्यामल दास, गरीब दास, और इनके साथ लालबाई जी भी दिल्ली से आये ।

Nijanand App

स्यामबाई राम राए, ए आए पोहोंचे कदम ।
मिलते ही सुख पाइया, इनों सौंपी आतम ॥५३॥

स्याम बाई और राम राए स्वामी जी के चरणों में आए । इन सभी साथियों ने श्री प्राणनाथ जी से मिलकर बहुत सुख पाया और अपनी आतम उनके चरणों में सौंप दी ।

इन समें उदयपुर में, बड़ो भया चरचा को पूर ।
दरसन राज के होवहीं, बड़ा रोसन हुआ जहूर ॥५४॥

इस समय उदयपुर में बड़े जोर शोर से आवेश की चर्चा का दौर चला । श्री जी के स्वरूप में सब को धाम धनी (युगल स्वरूप) के दर्शन होने लगे । इस प्रकार, यहां श्री जी के मुखारबिन्द की चर्चा का खूब प्रचार-प्रसार हुआ ।

साथ आहेड़ का आइया, और मोटी बाई ।
मसकरी राज सों करें, खुसखबरी राज सों पाई ॥५५॥

चर्चा के प्रभाव से उदयपुर के आहेड़ गांव के लोग भी आये तथा सुन्दर साथ बन गये । उनमें एक मोटी बाई थी जो धाम लौटने की शुभ घड़ी के आने की बात सुनकर श्री जी से विनोद भरी बातें करती थी ।

रांणे ने ए बात सुनी, अपनी मजलिस में ।
नित्य लोग आए कहें, अस्तुत निंदा सुनें ॥५६॥

उदयपुर के राणा ने अपने दरबार में यह बातें सुनी । प्रति दिन कुछ लोग आकर राणा से प्रशंसा करते थे और कुछ निंदा भी करते थे ।

कोई कहे बड़े साध हैं, इनके अनन्त लोचन ।
कोई कहे ए ठग हैं, इनों भेख धरा मोमिन ॥५७॥

कोई तो यह कहता था कि स्वामी जी पहुंचे हुए सन्त हैं । धर्म के विषय में इनका ज्ञान अगाध है। जो सब शास्त्रों के अनुसार है । कोई कहता था कि यह ठग हैं । इन्होंने केवल साधुओं वाला रूप बनाया हुआ है ।

कोई कहे मुसलमान हैं, भेजे हैं सुलतान ।
तुमको मुसलमान करनें, कहे वचन बिन पहिचान ॥५८॥

कोई कहता था कि यह लोग मुसलमान हैं और औरंगजेब के भेजे हुए हैं । यहां भेष बदल कर यह आपको मुसलमान बनाने के लिए आए हैं । बिना जाने पहचाने यह लोग इस प्रकार की अलग-अलग बातें करते थे ।

Nijanand App

कोई कहे कुरान पढ़त हैं, कोई कहें वेद कतेब ।
इन भांत राणे आगे, बातां बतावें ऐब ॥५९॥

कोई कहता था यह लोग कुरान पढ़ते हैं । कोई कहता था कि यह कुरान और पुराण दोनों ही पढ़ते हैं । इस प्रकार राणा के सामने पहुंच कर लोग श्री जी के दोष बताते थे ।

राणें पंडित भेज दिए, जाए के देखो तुम ।
उहां कैसी चरचा होत है, सुनाओ सारी हम ॥६०॥

राणा ने अपने दरबार के पंडितों को श्री प्राणनाथ जी के पास भेजा कि तुम वहां जाकर देखो कि हकीकत क्या है और यह लोग वहां कैसी चर्चा करते हैं ? लौट कर मुझे पूरी जानकारी दो ।

वे तो आए पेटारथू, इनों नाहीं काम आतम ।
देखी तो चरचा बड़ी, क्या जवाब देओ तुम ॥६१॥

पेट के लिए धर्म को बेचने वाले ये पंडित श्री जी के पास उनकी परख करने आए । श्री जी से जागृत बुद्धि, तारतम ज्ञान, आत्म कल्याण के ज्ञान की चर्चा सुनी, जिसे वे अब तक जानते ही नही थे । तब वे आपस में कहने लगे कि अब हम राणा को क्या समाचार देंगे ?

और चालीस प्रस्न भागवत के, पन्द्रह वेदान्त के सुनाए कान ।
इन प्रस्नों की हमको, कर देओ पहिचान ॥६२॥

तब श्री जी ने भागवत के ४० तथा वेदान्त के १५ प्रश्न पंडितों को दिए और कहा कि आप तो राजा के दरबार के महान पंडित है । कृपया आप लोग इन प्रश्नों का खुलासा करके समझाइए ।

जवाब न आवे उनको, दिया न जाए उत्तर ।
तब सब मिलके विचारहीं, करने लगे फिकर ॥६३॥

पंडित उन प्रश्नों के उत्तर नही दे सके । तब सबने मिलकर विचार विमर्श किया कि यदि यह बात राजा को पता चल गई तो अपने भविष्य का क्या होगा ?

ए तो बुरे वैरागी, हमारा भानेंगे रूजगार ।
इनकी निंदा कीजिए, तुम सब मिल होवो खबरदार ॥६४॥

तब पंडितों ने विचार किया कि ये साधू सन्यासी तो बहुत बुरे हैं । निश्चय ही हमारा स्थान लेकर हमारी रोजी खत्म कर देंगे इसलिए तुम सावचेत होकर इनकी निन्दा करो ।

Nijanand App

इनका बड़का ब्रह्मा, जब गर्भ अस्तुत करी ।
फेर परीक्षा आया देखनें, भूल बड़ी दिल धरी ॥६५॥

स्वामी जी कहते हैं कि सुन्दरसाथ जी ! ये ब्राह्मण, ब्रह्मा जी के वंश से ही तो हैं जिन्होंने श्री कृष्ण जी की स्तुति करके कहा कि संसार के कल्याण हेतु शीघ्र प्रगट होइये । जब श्री कृष्ण जी प्रगट हुए तो ब्रह्माजी उनकी परीक्षा लेने के लिए ब्रज में जा पहुंचे । तब श्री कृष्ण जी ने साधारण बालकों जैसी लीला करके उनको भूल में डाल दिया ।

गर्भ में पहिचानिया, भूल गया बाहिर ।
सो भूल आज लों, सब में भई जाहिर ॥६६॥

श्री कृष्ण जी जब गर्भ में थे तो उनके स्वरूप की ब्रह्मा जी को पहचान हो गई किन्तु गर्भ से बाहर आने पर भूल गए कि ये वही बैकुण्ठ के नाथ हैं । वही भूल जगत के लोगों में विशेषकर ब्राह्मणों में ब्रह्मा जी की अकल होने के कारण है ।

दूसरे ऋषेस्वर, करते थे जगन ।
अन्न मांग्या तिन पे, वे रहे कर्म में मगन ॥६७॥

दूसरा उदाहरण यह है श्री कृष्ण जी बछड़े चराने के लिए वन में गए । उन्होंने यज्ञ के कर्म काण्ड में लगे ऋषीश्वरों के पास ग्वालों को भेज कर भोजन मंगवाया । वे कर्मकाण्ड के द्वारा जिनकी स्तुति में लगे थे । उन्हीं श्री कृष्ण जी की पहचान न होने के कारण भोजन नही दिया ।

पहिचाना इनकी स्त्रियों ने, भई सोभा तिन ।
आज लों ब्रह्माण्ड में, चरचा होत आगे मोमिन ॥६८॥

उन ऋषियों की पत्नियों से जब भोजन की मांग की गई तो उन्होंने श्री कृष्ण जी के स्वरूप की पहचान करके स्वयं टोकरों में उठा कर विभिन्न प्रकार के भोजन की सामग्री श्री कृष्ण जी के पास पहुंचा दी । इसलिए संसार में उनकी आज दिन तक प्रशंसा होती है । (आज भी मथुरा के पंडे बर्तन मलते हैं तथा पत्नियां रबड़ी, मलाई और पेड़े बेचती हैं) मोमिनों के सम्मुख भी उनकी चर्चा हो रही है ।

भृगु बड़का इनका, लात मारी छाती भगवान ।
ए तिनकी नसल, होए असल माफक पहिचान ॥६९॥

भृगु ऋषि इनके ही पूर्वजों में से थे । उन्होंने विष्णु भगवान की छाती में लात मार कर परीक्षा ली थी । ब्राह्मण जाति के ये पंडित उन्हीं भृगु के वंशज हैं । अपने पूर्वजों के अनुसार ये भी पारब्रह्म को पहचानने में भूल करते हैं ।

Nijanand App

इनों जाए राणें आगे, लगे निंदा करने ।
ए वैरागी किसी न काम के, कबहूं न देखिए इने ॥७०॥

उन पंडितों ने राणा के पास जा कर श्री जी की निन्दा की और कहा कि ये वैरागी लोग बिल्कुल अनपढ़ और निकम्मे हैं । इनके पास आत्म तत्व की कुछ भी बात नही है । इनका तो मुंह भी नही देखना चाहिये।

और दूसरे अंकूर, तैसी आवत बुध ।
तिस वास्ते राणें को, कछु न भई सुध ॥७१॥

एक तो राणा ने पंडितों की निन्दा पर ध्यान दिया । दूसरे उसमें परमधाम का अंकूर न होने के कारण उसको सांसारिक बुद्धि ही प्राप्त थी । इसलिए राणा को श्री जी के स्वरूप की जरा भी पहचान न हो सकी।

यों करते एक दिन, राणा चला ताल पर ।
श्री जी साहिब जी तहां चले, श्री बाई जी रहे साथ खातर ॥७२॥

एक दिन राणा तालाब की ओर भ्रमण करने निकला । संयोग से श्री जी भी ताल पर पहुंच गए । श्री बाई जू राज महिला सुन्दरसाथ के लिए उदयपुर में ही रूक गईं ।

तहां जाए एक हवेली में, डेरा किया तित ।
लोग आवे चरचा को, हुआ आनन्द बड़ा इत ॥७३॥

उदयपुर के ताल पर पहुंचने पर श्री जी ने एक हवेली का प्रबन्ध किया । आसपास के लोग चर्चा सुनने के लिए आने लगे । सुनने वालों को अखण्ड आनन्द की अनुभुति हुई ।

इन समें अवगुन साथ के, ताको लेने लगे हिसाब ।
सब साथ पर खण्डनी, जोर हुई इनके बाब ॥७४॥

इस समय आप श्री जी ने सुन्दरसाथ के मन में छिपे हुए अवगुणों का लेखा जोखा किया । संसारी रेशमी शाल दुशालों तथा कीमती वस्तुओं के प्रति उनमें मोह देखा । उधर मुकुन्द दास जी ने दिल्ली से आए हुए सुन्दरसाथ के प्रति नफरत भर दी थी कि ये लोग मुसलमानों के साथ मिलकर मुसलमान हो गए हैं । इनके साथ मिलकर एक पंक्ति में भोजन नही करना चाहिए और भी अनेक अवगुण सुन्दरसाथ में दिखाई देने लगे । इनके अवगुण निकालने के लिए वेद-शास्त्रों के प्रमाण देकर श्री जी ने खूब खण्डनी करते हुए सुन्दरसाथ को समझाया ।

भेख बदलाये सबन के, श्रवनी पहिनाई कानन ।
और साज सब फकीरी, सो दिया हाथ मोमिन ॥७५॥

सुन्दरसाथ में एक दिली लाने के लिए साथियों का भेष बदलवा कर श्री जी ने उन्हें फकीरी श्रृंगार करवाया तथा फकीरी भेष के सब वस्त्र और सामान मोमिनों को दे दिया ।

Nijanand App

रोए धोए राजी भये, नाच कूद हुए खुसाल ।
काढ़े अपने अवगुन, ले जबराईल संग हाल ॥७६॥

मुकुन्ददास जी जैसे सुन्दरसाथ ने रो-धोकर इच्छा के विरूद्ध उसे स्वीकार किया । कुछ ने सहर्ष फकीरी भेष धारण कर लिया । स्वामी जी के आवेश स्वरूप को देख कर अवगुण निकाल कर सभी आत्म सम्बन्ध से एक सुन्दरसाथ के रूप में आ गए तथा आनन्द मंगल में नाचने कूदने लगे ।

प्रमाण : उसी समय सुन्दरसाथ की आतम को निर्मल करने के लिए यह किरंतन उतरा ।

कारी कामरी रे, मोको प्यारी लागे तूं ।
सब सिनगार को सोभा देवें, मेरा दिल बांध्या तुझसों ॥

(किरंतन, प्रकरण ११० चौपाई १)

फकीरी भेष सुन्दरसाथ के अवगुण निकालने के लिए उदयपुर से किया गया ।

इन समें दया राम, चंचल गंगाराम ।
और बनारसी आइया, सो आए पंहुचे इस ठाम ॥७७॥

ऐसे समय में दयाराम, चंचल दास, गंगाराम और बनारसी दास ने आकर श्री जी के चरणों में प्रणाम किया ।

सूरत से मोहन चतुर्भुज, आए लगे कदम ।
और साथी आए केतेक, तिनों सौंपी आतम ॥७८॥

सूरत से मोहन दास तथा चतुर्भुज भाई आए । उन्होंने श्री जी के चरणों में प्रणाम किया । और भी बहुत से सुन्दरसाथ आए जिन्होंने श्री जी के चरणों में अपनी आतम सौंप दी ।

इन समें पठान सौदागर, इनायत खान नाम ।
दूसरा मुराद खान, अब्दुलनवी उस ठाम ॥७९॥

इस समय एक पठान सौदागर इनायत खाँ आया । उसके साथ मुराद खाँ तथा अब्दुल नबी भी आकर श्री जी के मुखारविन्द की चर्चा सुनते हैं ।

और अलादाद खान, और यार खान ।
इलयास खान नवाबकर, और मिहीन को भई पहिचान ॥८०॥

और अलादाद खाँ, यार खाँ, इलियास खान, नवाबकर खाँ ने भी आकर चर्चा सुनी और मिहीन खाँ को चर्चा सुनते ही श्री जी के स्वरूप की पहचान हो गई और उसने तारतम ले लिया ।

Nijanand App

उसमान हसन खान, और अहमद खान ।
ए आए दीदार को, अव्वलखाँ को भई पहिचान ॥८१॥

उस्मान हसन खाँ, अहमद खाँ भी श्री जी की चर्चा सुनने के लिए आये । अव्वल खाँ ने भी आकर चर्चा सुनी और उसे भी श्री जी के स्वरूप की पहचान हो गई ।

दीदार पाया राह में, थे घोड़े पर असवार ।
आगे जलेब में चले, वैरागी थे खबरदार ॥८२॥

अव्वल खाँ ने श्री जी के राह में दर्शन पाए । अव्वल खां घोड़े पर सवार होकर आया था तथा उसके साथ नूर मुहम्मद खाँ फकीरी भेष में था । इन सबको देखकर और सब सुन्दरसाथ सतर्क हो गए थे ।

अव्वल खान पूछिया, जो है महम्मद नूर ।
मोको खबर तुम देओ, इन वैरागी का मजकूर ॥८३॥

अव्वल खाँ ने श्री जी के स्वरूप की पहचान करके नूर महम्मद खां से कहा कि इस सन्यासी के विषय में मुझे भली प्रकार जानकारी दो ।

जो तूं छिपावेगा मुझको, तो होऊंगा दावनगीर ।
ए कौन है कहा से आइया, ए कैसा फकीर ॥८४॥

ये कैसे सन्यासी हैं ? कहां से आए हैं ? इनका परिचय क्या है ? इन सब प्रश्नों की जानकारी तुम मुझे दो । यदि कोई बात छिपाई तो कयामत के दिन दामन झटक कर अपनी बात पूछूंगा ।

तब नूर महम्मदें कह्या, हैं सामिल दीन इसलाम ।
है कलमा कुरान इन पे, कमर बांधी दीन के काम ॥८५॥

तब नूर मुहम्मद ने कहा कि ये हकीकी दीने इस्लाम श्री निजानन्द सम्प्रदाय के मीर लगते हैं । कलमा और कुरान की हकीकत के भेद इनके पास हैं । दीने इस्लाम श्री निजानन्द सम्प्रदाय का वास्तविक ज्ञान देने के लिए ये कटिबद्ध हैं ।

ए तो हकुल आकीन था, सुनते इ ल्याया ईमान ।
आया उत दीदार को, कर दई अपनी पहिचान ॥८६॥

अव्वल खाँ तो खुदा पर अटल विश्वास रखने वाला था । ईमाम मेंहदी को श्री जी के स्वरूप में देखते ही विश्वास ले आया । पुनः उनके स्थान पर ताल की हवेली में दर्शन करने आया । आप श्री जी ने उसे अपने स्वरूप की पहचान करा दी ।

Nijanand App

चाबुक अपने हाथ लेए के, मारत अपनें अंग ।
तब मने किया राज नें, आए बैठो हमारे संग ॥८७॥

आवेश में आकर चाबुक को अपने हाथ में लेकर वह अपने शरीर पर मारने लगा । तब श्री जी ने उसे मना किया और कहा कि तुम हमारे पास आकर बैठो ।

उहाँ पट का काम चले, लिखावें बैठे राज ।
मुकुन्द दास दारोगा रहे, बैठा था इन काज ॥८८॥

उस समय वहां पर परमधाम के पट एवं चर्चनी का कार्य चल रहा था । श्री जी स्वयं परमधाम का वर्णन करके वृत्त लिखवा रहे थे । मुकुन्ददास जी श्री जी के कहे अनुसार पट को दिखाने का कार्य कर रहे थे ।

आए पठान मिल के, करने को दीदार ।
होने लगी चरचा, सवाल किया परवरदिगार ॥८९॥

पठान लोग दर्शन करने के लिए मिलकर आए और वहां उनकी चर्चा सुनी । उन लोगों ने प्रश्न किया कि हमारे परवरदिगार अल्लाह तआला को अपना क्यों कहते हो ?

हमारे तुम कहो, कलमा रसूल का ।
तो हम होवें तुमारे, एता चाहता था ॥९०॥

अब यदि आप अपने मुख से रसूल साहब के कलमे का उच्चारण कर दें तो हम सब भी आपके होकर रहेंगे । वो केवल इतना ही देखना चाहता था ।

जबराईल इन समें, श्री जी को बैठा जोस ।
मेरे महम्मद बीच में, कौन आवे बड़ा अफसोस ॥९१॥

पठानों के मुख से इतनी बात सुनते ही श्री जी को आवेश आ गया । वे कहने लगे - ''बड़े अफसोस की बात है, मेरे और महम्मद साहब के बीच में आने वाले ये लोग कौन हैं । महम्मद साहब तो मेरे अन्दर हैं ।''

अव्वलखान की रूह पर, आए जबराइलें किया जोर ।
जोस देख काफर डरे, करने लगे सोर ॥९२॥

इस समय अव्वलखान की रूह पर भी आवेश आया । उनके आवेश पूर्ण मुख के तेज को देखकर मुनकरी करने वाले पठान भयभीत होकर शोर मचाने लगे ।

Nijanand App

तब उठ खड़े रहे, बिदा मांगी सबन ।
घरों जाए सोर किया, लगे निंदा करने मोमिन ॥९३॥

वे लोग वहां से उठ खड़े हुए तथा अपने घर जाने की इजाजत मांगी । अपने घर पहुंचकर वे मोमिनों की बुराई करने लगे और मोमिनों के प्रति झूठी बातें करने लगे ।

एक दिन किरंतन में, राणा आया करन दीदार ।
मोंह छिपाए ठाढ़ा रहूया, देखा रासलीला बिहार ॥९४॥

एक दिन राणा तालाब की हवेली में भेष बदलकर श्री जी के दर्शन करने आया । वहां आकर अपना मुंह छिपाए हुए खड़ा होकर देखता रहा । रासलीला के कीर्तनों को सुनकर उसे आनन्द मिला ।

इतना ही था अंकूर, तेता लिया फल ।
आज्ञा थी तोलों रहूया, भई तेती आतम निरमल ॥९५॥

राणा के भाग्य में इतना ही आनन्द लिखा था । जो उसे प्राप्त हो गया । श्री राज जी महाराज की जितनी आज्ञा थी, उतनी ही देर वह वहां रहा । उतना ही वह निर्मल हो सका ।

इनों के दिल में सक रहे, ल्याया ईमान अब्बल खान ।
तिनसों मसकरी करें, भई इनको पूरी पहिचान ॥९६॥

तरह-तरह की बातें सुनने से राणा के मन में श्री जी के प्रति सन्देह था । अब्बल खाँ के मन में श्री जी के प्रति पूरा ईमान था । उसने श्री जी के स्वरूप की पहचान करके तारतम लिया । राणा अब्बल खां के विषय में टोंट (व्यंग्य) कसने लगा कि ओहो ! मुसलमान को भी एक हिन्दू के तन में ईमाम मेंहदी नजर आने लगे और कहता है कि मुझे आतम तत्व की पूरी पहचान हो गई है ।

इन समें अमरा जी, वह पहिले ल्याया ईमान ।
रामसिंह गंगा के घर में रहे, कछु इनको भई पहिचान ॥९७॥

अमरा जी भाई बहुत पहले से ही श्री जी के प्रति विश्वास ला चुके थे । वह इस समय रामसिंह और गंगा के घर में रहते थे । अमरा जी के सत्संग से इन दोनों को कुछ पहचान हो गई ।

और भोगी दास जो, ए आया करन दीदार ।
मीठी लगी चरचा, पहिचाना परवरदिगार ॥९८॥

भोगी दास जी श्री जी के दर्शन करने आये । उनको चर्चा बहुत अच्छी लगी । श्री जी के स्वरूप को पहचान कर वह समझ गया कि यही मेरे धाम के धनी श्री राजजी महाराज हैं ।

Njanand App

महामति कहे ऐ मोमिनों, ए तलाब करो याद ।
फेर कहों उदयपुर की, जो बीतक बुनियाद ॥९९॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! उदयपुर के ताल की इस बीतक को हमेशा याद रखना । फिर वहां से उदयपुर में आये । अब उस बीतक को सुनो ।

(प्रकरण ४९, चौपाई २६२७)

उदयपुर

फेर उहां से आये उदयपुर, उतरे हवेली में ।
साथ सब आये मिल्या, सुख पाया मिलाप से ॥१॥

फिर ताल से आप स्वामी जी सब सुन्दर साथ को लेकर उदयपुर आकर एक हवेली में ठहरे । स्थान-स्थान से सुन्दर साथ आकर श्री जी से मिले तथा दर्शन करके अति प्रसन्न हुए ।

इन समें गोवरधन भट्ट, सूरत से आया ।
धोली बाई साथ थी, तिन को संग ल्याया ॥२॥

इस समय सूरत से गोवर्धन दास आये । उनकी धर्मपत्नी धोली बाई साथ में थी । वे भी श्री जी के दर्शनों के लिए आई थी ।

ए दोऊ आए कदमों लगे, साथ सों किया मिलाप ।
बातें सुनी इत उत की, लगे चर्चा करनें आप ॥३॥

दोनों ने आकर श्री जी के चरणों में प्रणाम किया । दोनों स्थानों के सुन्दरसाथ की चर्चा हुई । तब श्री जी ने वाणी चर्चा आरम्भ की ।

इन समें पातसाह ने, करी मुहींम राणे पर ।
आये अजमेर से भेजिया, मथुरिया इन पर ॥४॥

इस समय औरंगजेब बादशाह का उदयपुर के राणा पर चढ़ाई करने का समाचार आया । उसने अजमेर से अपने दूत मथुरिया को भेज कर यह संदेश कहलाया ।

आओ मेरे दीन में, ल्याओ तुम ईमान ।
पांच परगने देऊं तुमें, जो होवे मुसलमान ॥५॥

तुम मेरे दीने इसलाम में ईमान ले आओ । यदि मुसलमान हो जाओगे तो तुम्हें पाँच परगने भेंट में दिये जायेंगे ।

Nijanand App